ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-6* Issue-4* July- 2021
Anthology : The Research

शहीद धन सिंह कोतवाल व्यक्तित्व एवं कृतित्वः 1857 के स्वतंत्रता संग्राम के विशेष संदर्भ में

Shaheed Dhan Singh Kotwal Personality and Creativity: With special reference to the freedom struggle of 1857

Paper Submission: 04/07/2021, Date of Acceptance: 12/07/2021, Date of Publication: 24/07/2021

राम चन्द्र सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर,
राजनीति विज्ञान,
श0मं0प0राज0 महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
मेरठ, उत्तर प्रदेश, भारत

Abstract

भारतीय इतिहास की पुस्तकों में वर्णित है कि भारत में स्वतन्त्रता की क्रान्ति का आरम्भ 10 मई 1857 को मेरठ से हुआ इसलिए इसका श्रेय भी क्रान्ति के वास्तविक नेतृत्व करने वालों को ही मिलना चाहिए जो अभी तक नहीं मिला, और वह नेतृत्व है शहीद धनसिंह कोतवाल। मेरठ में इस क्रान्ति का नेतृत्व तत्कालीन शहर कोतवाल शहीद धनसिंह कोतवाल ने किया। 10 मई 1857 को मेरठ में क्रान्तिकारी सैनिकों और पुलिस फोर्स ने अंग्रेजों के विरूद्ध साझा मोर्चा गठित कर क्रान्तिकारी घटनाओं को अंजाम दिया। सैनिकों व पुलिस फोर्स की क्रान्ति की खबर फैलते ही मेरठ की शहरी जनता और आसपास के गाँव विशेषकर पांचली घाट, नंगला व गगोल इत्यादि के हजारों ग्रामीण मेरठ की सदर कोतवाली क्षेत्र में जमा हो गये। उसके बाद उन्होंने सिपाहियों व क्रान्तिकारी सैनिकों के साथ मिलकर सदर बाजार तथा कैंट क्षेत्र में वहां-वहां हमलेकिए जहां अभी तक नहीं हुए थे।

इसी कोतवाली में धनसिंह कोतवाल (प्रभारी) के पद पर कार्यरत थे। मेरठ की पुलिस, क्रान्तिकारी सैनिक तथा शहरी और ग्रामीण किसानों का नेतृत्व करने का साहस धनसिंह कोतवाल ने दिखाया और वे एक प्राकृतिक नेता के रूप में उभरे। उनका आकर्षक व्यक्तिव, उनका स्थानीय होना (पांचली उनका पैतृक गांव है) पुलिस में उच्च पद पर होना तथा स्थानीय क्रान्तिकारियों को उनका विश्वास प्राप्त होना कुछ ऐसे कारक थे जिन्होंने धनसिंह कोतवाल को 10 मई 1857 के दिन मेरठ की क्रान्तिकारी जनता के नेता के रूप में उभरने में मदद की। उनके स्थानीय होने के कारण आसपास के गांवों के लोगों का उन पर विश्वास था और इसी विश्वास ने ग्रामीण लोगों को क्रान्ति से जुड़ने के लिए प्रोत्साहित किया।

मेरठ गजेटियर (पृ0सं0 52) लिखता है कि आसपास के गांव से जो हजारों की संख्या में लोग कोतवाली क्षेत्र में एकत्रित हुए उनमें से अधिकांश गुर्जर जाति से थे और धनसिंह (धन्ना सिंह) कोतवाल भी पास के गांव पांचली खुर्द की इसी जाति से था। उसी ने अपने लोग भेजकर आसपास के गांवों में क्रान्ति की सूचना भिजवाई तथा सैनिकों के साथ सिपाहियों को भी क्रान्ति में जाने से नहीं रोका।

क्रान्ति के दमन के पश्चात् ब्रिटिश सरकार ने 10 मई 1857 की क्रान्ति में पुलिस की भूमिका की जांच हेतु मेजर विलियम्स की अध्यक्षता में एक कमेटी गठित की थी, जिसने भी अपनी जांच में विभिन्न गवाहों की गवाही के आधार पर बताया कि धनसिंह कोतवाल ने ही आसपास के गांव में लोगों को सूचना भेजकर बताया था तथा पुलिस को भीक्रान्ति में शामिल होने से नहीं रोका था।

It is mentioned in the Indian history books that the revolution of independence in India started from Meerut on May 10, 1857, so the credit should also go to the real leaders of the revolution, which have not been found yet, and that leadership is Shaheed Dhan Singh Kotwal. This revolution in Meerut was led by the then city Kotwal Shaheed Dhan Singh Kotwal. On 10 May 1857, revolutionary soldiers and police force formed a common front against the British and carried out revolutionary events in Meerut. As soon as the news of the revolution of soldiers and police force spread, thousands of villagers of Meerut and surrounding villages especially Panchli Ghat, Nangla and Gagol etc. gathered in Sadar Kotwali area of Meerut. After that, he, along with the soldiers and revolutionary soldiers, carried out attacks in Sadar Bazar and Cantt area where there had not been yet.

मुख्य शब्दः स्वाधीनता, देशभक्त, आन्दोलन, राष्ट्रवादी, क्रान्ति, धर्म इत्यादि।
Independence, Patriot, Movement, Nationalist, Revolution, Religion etc.

प्रस्तावना

भारत देश की स्वतन्त्रता हेतु अनेकों प्रयास हुए किन्तु सन् 1857 का स्वतन्त्रता संग्राम एक ऐसा व्यापक संग्राम था कि यह पूरे देश में व्याप्त हुआ। यही कारण है कि अनेकों इतिहासकारों ने इसे प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम कहा है। इतिहास की लगभग सभी सम्बन्धित पुस्तकों में इस स्वतन्त्रता संग्राम का प्रारम्भ मेरठ से बताया जाता है। 10 मई 1857 को इस संग्राम का श्रीगणेश देशभक्त सैनिकों, सिपाहियों तथा पास के ग्रामीणें एवं शहर के नागरिकों के साझा मोर्चा द्वारा हुआ था। अब प्रश्न यह उठता है कि इस संयुक्त संगठन का नेतृत्व किसने किया था? क्योंकि बिना नेतृत्व के न तो कोई संगठित हो सकता है और न ही आन्दोलन चलाया जा सकता है। इस प्रश्न का उत्तर ढूंढने से पता चलता है कि बैरकपुर (पं0 बंगाल) से प्रारम्भ चर्बी लगे कारतूसों की अफवाह मेरठ पहुंच चुकी थी और 24 अप्रैल 1857 को अंग्रेजों ने मेरठ में नये कारतूसों का प्रयोग आरम्भ करने का निश्चय किया। जब 23 अप्रैल 1857 को मेरठ स्थित तीसरी लाइट कैवेलरी (घुड़सवार टुकड़ी) को अगले दिन परेड की आज्ञा दी गई तो उसी दिन शाम को सभी सिपाहियों ने एकत्र होकर सौगंध खाई कि वह इन कारतूसों को हाथ नहीं लगाएंगे। हिन्दू सिपाहियों ने गंगाजल हाथ में लिया तो मुसलमान सिपाहियो ने कुरान-ए-पाक। धीरे-धीरे यह असन्तोष बढ़ रहा था तथा एक के बाद एक स्थान पर फैल रहा था, टुकड़ियों को भंग करना पड़ रहा था, लेकिन न जाने क्यूं अंग्रेज अधिकारी शायद देशी सिपाहियों को बेबस समझकर उन पर दबाव डाल रहे थे। वे समझते थे कि उन्होंने ही इनको रोजगार दिया है इसलिए ये सिपाही अंततः उनके पैरों पर आ गिरेंगे, लेकिन ऐसा हुआ नहीं।

24 अप्रैल 1857 को तीसरी लाइट कैवेलरी के कमान अधिकारी कारमाइकेल स्मिथ ने परेड आरम्भ करने का आदेश दिया तथा नये कारतूसों को लेने के लिए कहा। यह भी तथ्य सामने आया है कि ये कारतूस खाली थे जैसा कि अभ्यास में प्रयुक्त होते हें। इसका प्रयोजन शायद यह था कि सिपाहियों की कारतूसों को प्रयोग करने की इच्छा या अनिच्छा को जाना जा सके। 90 घुड़सवारों में से 85 ने नये कारतूसों को लेने तथा उनका प्रयोग करने से मना कर दिया। इस पर सख्त रूख अपनाते हुए अंग्रेजों ने तीव्र कार्यवाही की तथा अगले ही दिन जाँच समिति बनाकर शीघ्र ही उनको सजा देने का निर्णय भी ले लिया गया। वैसे तो जांच में यह होना चाहिए था कि सम्बन्धित सिपाहियों को आयुधालय ले जाया जाता तथा उन्हें टेस्ट करके दिखाया जाता कि जो तुम लोग सोच रहे हो वह सच नहीं अफवाह है, किन्तु अंग्रेज अधिकारियों ने ऐसा नहीं किया। 85 सैनिकों को सख्त दण्ड देने की मंशा से 6, 7 व 8 मई को कोर्ट मार्शल किया गया। उन सभी सैनिकों को 10 वर्ष सश्रम कारावास की सजा सुनाई गई, किन्तु 11 कम आयु के सिपाहियों को पांच वर्ष की सजा सुनाई गई।

यह बात ध्यान रखने योग्य है कि अभी तक सिपाही किसी प्रकार के विद्रोह के मूड में नहीं थे, वे केवल नये कारतूसों का प्रयोग नहीं करना चाहते थे, किन्तु अंग्रेज इस बात पर अड़े हुए थे। इस पृष्ठभूमि में यह बिन्दु भी ध्यान देने योग्य है कि तीन दिन कोर्ट मार्शल के बाद भी अंग्रेज सन्तुष्ट नहीं हुए और उन्होंने निर्णय लिया कि इन सिपाहियों को ऐसी सजा दी जाये जिससे अन्य कोई भविष्य में ऐसी हिम्मत न कर सके। ऐसा करने के लिए उन्होंने 9 मई 1857 को कैद सिपाहियों की बेइज्जती करने की ठानी। यह शायद उनकी सबसे बड़ी भूल थी। मेरठ में तैनात सभी देशी तथा विदेशी सिपाहियों को छावनी के उत्तरी क्षेत्र में स्थित परेड ग्राउण्ड में एकत्र किया गया। रेजिमेंटों को इस तरह श्रेणीबद्ध कर खड़ा किया गया जिससे सभी देशी सिपाही तोपखाने की मारक सीमा में रहें। केन्द्र का स्थान खाली रखा गया, उसके तीन ओर देशी सिपाहियों की तीनों रेजिमेंटों को लगाया गया तथा उनके बाहर ब्रिटिश सैनिकों की रेजिमेंटों को। देशी सैनिकों के पास उनकी बंदूके अवश्य थी किन्तु उन्हें गोलियां नहीं दी गई, जबकि ब्रिटिश सैनिक किसी भी कार्यवाही के लिए पूरी तरह तैयार थे। इसके बाद उन 85 सैनिकों को लाया गया, मानो वो सामान्य अपराधी हों, सैनिक नहीं। सभी देशी सैनिक इन देशभक्त सैनिकों को भलीभांति देख सकते थे। उन्होंने अभी भी अपनी वर्दी पहनी हुई थी, उन्हें तोपखाने की मार सीमा में ही रखा गया जिससे कोई भी विरोध होने पर उन पर आक्रामक कार्यवाही हो सके। उन 85 सैनिकों को सभी के सामने अपमानित किया गया, उनकी वर्दी फाड़कर उतार ली गई तथा बेड़ियां पहना दी गई और शारीरिक दण्ड भी दिया गया। सभी के समक्ष उनकी सजा का ऐलान भी किया गया। उन्हें बेड़ियों में पैदल ही सड़क मार्ग से ले जाया गया जिससे आम नागरिक भी अंग्रेजों की दण्ड व्यवस्था से भयभीत हो जायें। तीन किलोमीटर दूर तक चलाते हुए विक्टोरिया पार्क स्थित जेल में बंद कर दिया गया। लेकिन अंग्रेज अपने मकसद में कामयाब नहीं हुए क्योंकि इस घटना से आम नागरिकों में भय के स्थान पर रोष व्याप्त हो गया जिसका परिणाम अगले ही दिन 10 मई 1857 को क्रान्ति के आरम्भ के रूप में सामने आया। इस आन्दोलन में सक्रिय क्रान्तिकारी नेतृत्व की भूमिका अमर शहीद धनसिंह कोतवाल ने 10 मई 1857 के दिन निभाई थी। 10 मई 1857 को मेरठ में देशभक्त सैनिकों और पुलिस फोर्स ने अंगे्रजों के विरूद्ध साझा मोर्चा बनाकर क्रान्तिकारी घटनाओं को अंजाम दिया। सैनिकों के द्वारा उठाये गये क्रान्तिकारी कदमों की खबर फैलते ही मेरठ की शहरी जनता और आसपास के गांव विशेकषकर पांचली घाट, नगला, पावली तथा गगोल इत्यादि के हजारों की संख्या में ग्रामीण मेरठ सदर कोतवाली क्षेत्र में जमा हो गये। इसी कोतवाली में धनसिंह कोतवाल के पद पर कार्यरत थे। मेरठ की पुलिस देशभक्ति के रंग में सराबोर हो चुकी थी। ऐसे में धनसिंह कोतवाल, देशभक्त जनता (शहरी, मेरठ पुलिस व किसान) के बीच एक स्वाभाविक

(प्राकृतिक) नेता के रूप में उभरे। उनका आकर्षक व्यक्तित्व, उनका स्थानीय होना (वह मेरठ के निकट पांचली गांव के रहने वाले थे) पुलिस में उच्च पद पर होना और स्थानीय क्रान्तिकारियों को उनका विश्वास प्राप्त होना कुछ ऐसे कारक थे जिन्होंने धनसिंह कोतवाल को 10 मई 1857 के दिन क्रान्तिकारियों के नेता के रूप में उभरने में मदद की।

इस आलेख के लिए कई महत्त्वपूर्ण व प्रसिद्ध लेखकों की रचनाओं, इतिहासकारों द्वारा लिखित इतिहास की पुस्तकों, पत्रिकाओं, मेरठ गजेटियर एवं कई समाचारपत्रों का अध्ययन किया गया जिनमें- मेरठ डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, गवर्नमेन्ट प्रेस, पांचली, घाट, गगोल आदि ग्रामों में प्रचलित लोक व्याप्तियों, किवदन्ती, नैरेटिव ऑफ इवेन्ट्स अटैन्डिंग द आऊट ब्रेक ऑफ डिस्टरबेन्सिंग एण्ड दे रेस्टारेशन ऑफ अथॉरिटी इन डिस्ट्रिक्ट मेरठ 1857-58, मैमोरेन्डम ऑफ द म्यूटनी एण्ड आऊटब्रेक ऐट मेरठ इन मई 1857, वाई मेजर विलियम्स, कमिश्नर ऑफ द मिलेट्री पुलिस, नार्थ-वेस्टर्न प्रोविन्स इलाहाबाद, 15 नवम्बर 1858, जे0ए0वी0 पॉमर म्यूटनी आऊटब्रेक एट मेरठ, जी0डब्लू0 विलियम्स-म्यूटनी नैरेटिव इन डिस्ट्रिक्ट मेरठ, टेकन एट मेरठ वाई0जी0डब्लू0 विलियम्स आदि सन्दर्भ एवं टिप्पणियों से तथा आचार्य दीपांकर द्वारा रचित स्वाधीनता संग्राम और मेरठ, महाराष्ट्र मानस, मेरठ, आर0सी0 मजूमदार की द सिपॉय म्यूटनी एण्ड रिवोल्ट ऑफ 1857, एस0बी0 चौधरी सिविल रिवेलयन इन इण्डियन म्यूटिनीज 1857, एस0बी0 चौधरी सिविल रिवेलयन इन इण्डियन म्यूटिनीज 1857-59, ए0के0 गांधी 1857 क्रान्ति व क्रान्तिधरा, डॉ0 रोताश कुमार पीएच0डी0 थीसिस 1857 की क्रान्ति में कोतवाल धनसिंह एवं मेरठ परिक्षेत्र के गुर्जरों का योगदान आदि स्रोतों का अध्ययन एवं अवलोकन किया गया, जिनसे यह स्पष्ट हो जाता है कि मेरठ में 1857 की क्रान्ति का नेतृत्व शहीद धनसिंह कोतवाल के द्वारा ही किया गया था।

अध्ययन का उद्देश्य

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में अनेको वीर शहीदों ने अतुलनीय बलिदान दिया किन्तु इतिहास के पन्नो में उनका कोई जिक्र नही किया गया।प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य ऐसे ही शहीदों व 1857 की क्रांति के प्रमुख नायक शहीद धनसिंह कोतवाल के योगदान को उजागर करना है,जिससे आने वाली पीढ़ियां उनके बलिदान से परिचित हो सकें।

विषय विस्तार

स्वाधीनता संग्राम-उपबिन्दु

शहीद धनसिंह कोतवाल का जीवन परिचय- मेरठ शहर से 10 किमी पश्चिम दिशा में मेरठ से बागपत मार्ग पर पांचली खुर्द गांव स्थित हैं मेरठ जिले के इसी पांचली गांव में धनसिंह उर्फ धन्ना सिंह का जन्म 27 नवम्बर सन् 1814 ई0 दिन रविवार कार्तिक पूर्णिमा सुबह करीब 6 बजे हुआ। कहा जाता है कि जब धनसिंह का जन्म हुआ तो उनके परिवार में खुशी की लहर दौड़ गयी क्योंकि उनसे पहले उनके माता-पिता के दो बेटियां थी। तीसरी संतान के रूप में धनसिंह ने जन्म लिया तत्पश्चात् उनके एक और छोटे भाई का जन्म हुआ। इस तरह धनसिंह के परिवार में दो बड़ी बहन व एक छोटा भाई सहित कुल चार बच्चे थे। कहा जाता है कि उनका छोटा भाई मानसिक रूप से थोड़ा कमजोर था इसलिए पूरा परिवार धनसिंह को ही बहुत प्यार करता था तथा उसे धन्ना सिंह कहकर पुकारते थे। धनसिंह के पिता का नाम सालकराम व माता का नाम मनभरी था। उनके पिता उस समय के पढ़े-लिखे व्यक्ति थे तथा उनके साथ-साथ गांव के मुख्य व्यक्ति थे तथा एक बड़े किसान भी थे। उन्हें अंग्रेजी हुकुमत द्वारा गांव का मुखिया नियुक्त किया गया, इस नाते वे गांव की सारी गतिविधियों में भाग लेते थे। गांव की समस्त जिम्मेदारी मुखिया को सौंप दी जाती थी किन्तु उसके ऊपर एक अंग्रेज अधिकारी को निगरानी हेतु रखा जाता था जोकि यह देखता था कि मुखिया कुछ गलत तो नहीं कर रहा। गांव से लगान वसूल करने तथा अन्य खाद्य सामग्री जो अंग्रेजों के खजाने में जाती थी कि सारी जिम्मेदारी मुखिया की ही होती थी। यदि गांव का कोई व्यक्ति समय पर लगान नहीं दे पाता था तो उसकी समस्त जिम्मेदारी मुखिया की होती थी तथा ऐसा होने पर अंग्रेजों द्वारा मुखिया को बेइज्जत किया जाता था। एक बार की बात है कि गांव के लोग समय से लगान अदा नहीं कर पाये जिस कारण मुखिया भी अंग्रेजी सरकार को लगान नहीं पहुंचा पाया, तो पूरे गांव के सामने उनकी बेइज्जती की गई जिसे वो सहन नहीं कर पाये। उन्होंने मुखिया का पद त्यागने का निर्णय लिया और अपना त्यागपत्र भेज दिया, किन्तु अंग्रेजों ने उसे स्वीकार नहीं किया तथा उन्हें ही मुखिया बने रहने के लिए कहा जिसको स्वीकार करने के अतिरिक्त उनके पास कोई चारा नहीं था।

शिक्षा

उन्नीसवीं शताब्दी में शिक्षा की स्थिति इतनी ठीक नहीं थी, शहरों की अपेक्षा गांव में शिक्षा की स्थिति और भी निम्न थी। धनसिंह की प्राथमिक शिक्षा पांचली गांव से 3 किमी पश्चिम दिशा में स्थित जानी खुर्द कस्बे में हुई। कहा जाता है कि जानी खुर्द गांव में उस समय कक्षा पांच (दर्जे पांच) तक का ही स्कूल था, जिसकी देखरेख एक आचार्य करते थे जो बहुत विद्वान थे। आचार्य जी के बारे में यह लोकव्याप्ति है कि उन्होंने गांव-गांव जाकर बच्चों को बुला-बुलाकर शिक्षा दी। एक बार की बात बताई जाती है कि आचार्य को अंग्रेजों के एक अधिकारी ने डरा दिया गया कि आप गांव-गांव जाकर लोगों को अंग्रेजों के खिलाफ भड़काते हैं, इसलिए आप शिक्षा का यह नाटक बन्द कर दें। किन्तु आचार्य जी पर इस बात का कोई स्थाई प्रभाव नहीं हुआ, वो केवल कुछ दिन तक गांवों में नहीं गये। कुछ समय बाद उन्होंने फिर से गांवों में जाना शुरू कर दिया। लोगों का यहां तक कहना है कि जितने भी बच्चे उनके पास शिक्षा ग्रहण करते थे आचार्य जी उन्हें देशभक्ति की शिक्षा भी देते थे। बालक धनसिंह पर इसका गहरा प्रभाव पड़ा। इसी बीच धनसिंह जब कक्षा पांच के छात्र थे तो उनकी माता मनभरी का देहावसान हो गया तथा अब उनकी पढ़ाई पर भी संकट के बादल मंडराने लगे। इसके बाद उनके मामा जो दिल्ली के पास

शकरपुर गांव के रहने वाले थे, वो धनसिंह व उनकी एक बहन को अपने साथ ले गये तथा एक छोटा भाई व बड़ी बहन चाचा मवासी के पास छोड़ गये। उनके मामा उस समय के हिसाब से पढ़े-लिखे व्यक्ति थे तथा पढ़ाई का महत्त्व समझते थे। उन्होंने धनसिंह का प्रवेश एक पास के ही स्कूल में करा दिया जहां उनकी कक्षा पांच से आगे की शिक्षा पूरी हुई। इस बीच उनके परिवार की स्थिति काफी खराब हो गयी थी, इसलिए उन्होंने अपने मामा से कोई नौकरी दिलाने की इच्छा जताई जिसपर उनके मामा ने दिल्ली में ही कहीं उनको नौकरी दिलवा दी। इसी बीच धनसिंह की दोनों बहनों की शादी भी हो गयी तथा इस नौकरी को छोड़कर अपने गांव पांचली वापस आ गये तथा चाचा के साथ खेती करना शुरू कर दिया। अब तक उनके पिता का देहावसान भी हो चुका था जो एक बड़ी मार्मिक घटनाक्रम से जुड़ा हुआ है। जिसका विस्तृत विवरण आगामी उपबिन्दु में उपलब्ध रहेगा।

पुलिस की सेवा में भर्ती- कहा जाता है कि एक दिन किसी बात को लेकर उनकी चाची ने उन्हें कुछ भला-बुरा कह दिया। इस बात को धनसिंह सहन नहीं कर सके और घर से निकल गये। एक कहावत है कि बुरे वक्त में भगवान भी साथ देता है तो बुरे कार्य भी अच्छे हो जाते हैं, वही धनसिंह के साथ हुआ। जब वे घर से नाराज होकर पास के शहर मेरठ में नौकरी की तलाश में गये तो वहां पुलिस की भर्ती चल रही थी। धनसिंह भी इस भर्ती में खड़े हो गये। लम्बा-चैड़ा शरीर एवं मजबूत कद-काठी के चलते उन्हें इस भर्ती में चुन लिया गया। भर्ती होने के कुछ समय बाद जब धनसिंह अपने गांव गये तो उनके चाचा भर्ती की खबर से बहुत नाराज हुए क्योंकि वे अंग्रेजों के घोर विरोधी थे और उनकी नौकरी को अच्छा नहीं मानते थे। धनसिंह इस बात से भलीभांति परिचित थे किन्तु उनकी आर्थिक स्थिति और कुछ कर दिखाने के जुनून के कारण उन्होंने यह नौकरी करने का फैसला बरकरार रखा।

स्वतन्त्रता संग्राम-1857 एवं धनसिंह कोतवाल

ऐतिहासिक तथ्यों के आधार पर 1857 का स्वतन्त्रता आन्दोलन 10 मई को प्रारम्भ हुआ। तथ्यात्मक आधार पर मान्यता देते हुए भारत सरकार और समस्त भारतवासी 10 मई को प्रत्येक वर्ष "क्रान्ति दिवस" के रूप में मनाते हैं, तो क्रान्ति की शुरूआत का श्रेय भी उसी व्यक्ति को दिया जाना चाहिए जिसने 10 मई 1857 के दिन मेरठ में घटित आन्दोलनकारी घटना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई हो।

इस भूमिका का निर्वहन करने वाले अमर शहीद थे धनसिंह कोतवाल। उन्होंने 10 मई 1857 को मेरठ में देशभक्त सैनिकों और पुलिस फोर्स का साझा मोर्चा बनाकर क्रान्तिकारी घटनाओं को अन्जाम दिया। सैनिकों के विरोध की खबर फैलते ही मेरठ की शहरी जनता तथा आसपास के गांव विशेषकर पांचली, घाट, नंगला तथा गगोल इत्यादि के हजारों ग्रामीण मेरठ की सदर कोतवाली क्षेत्र में इकट्ठा हो गये। इसी कोतवाली में धनसिंह कोतवाल के पद पर कार्यरत थे। मेरठ की पुलिस देशभक्ति के रंग में सराबोर हो चुकी थी।

ऐसे में धनसिंह कोतवाल देशभक्तों के समूह (सैनिक, मेरठ की शहरी, पुलिस और पास के गांवों के किसान) में एक स्वाभाविक नेता के रूप में उभरे। उनका आकर्षक व्यक्तित्व, उनका स्थानीय होना, पुलिस में उच्च पद पर होना तथा स्थानीय क्रान्तिकारियों का उनको विश्वास प्राप्त होना, कुछ ऐसे कारक थे जिन्होंने धनसिंह कोतवाल को 10 मई 1857 के दिन मेरठ की देशभक्त जनता के नेता के रूप में उभरने में मदद की। उन्होंने देशभक्त जनता का नेतृत्व किया तथा रात दो बजे मेरठ जेल पर हमला कर दिया। जेल तोड़कर 836 देशभक्त कैदियों को छुड़ा लिया और जेल में आग लगा दी। जेल से छुड़ाये गये समस्त देशभक्त कैदी भी क्रान्ति में शामिल हो गये। उससे पहले पुलिस फोर्स के नेतृत्व में क्रान्तिकारियों ने पूरे मेरठ सदर बाजार और कैन्ट क्षेत्र में क्रान्तिकारी घटनाओं को अंजाम दिया। रात में ही देशभक्त सैनिक दिल्ली कूच कर गये और क्रान्ति मेरठ के देहात में फैल गई।

एक ऐतिहासिक क्रान्ति के कारण शहीद मंगल पाण्डे का नाम मेरठ से जोड़ दिया जाता है किन्तु सत्य यह है कि मंगल पाण्डे 8 अप्रैल 1857 को बैरकपुर (बंगाल) में शहीद हो गये थे। इस तरह 10 मई 1857 की मेरठ से प्रारम्भ हुई क्रान्ति से उनका सम्बन्ध नहीं था। मंगल पाण्डे ने चर्बी लगे कारतूसों के विरोध में अपने एक अफसर को 29 मार्च, 1857 को गोली से उड़ा दिया था। जिसके पश्चात् उन्हें गिरफ्तार कर 8 अप्रैल 1857 को बैरकपुर (बंगाल) में फांसी दे दी गईथी।

10 मई 1857 की क्रान्ति के दमन के पश्चात् ब्रिटिश सरकार ने मेरठ में हुई क्रान्तिकारी घटनाओं में पुलिस की भूमिका की जाँच के लिए मेजर विलियम्स की अध्यक्षता में एक कमेटी गठित की। मेजर विलियम्स ने उस दिन की घटनाओं का भिन्न-2 गवाहियों के आधार पर गहन विवेचन किया तथा इस सम्बन्ध में एक स्मरण पत्र तैयार किया। स्मरण पत्र के अनुसार उन्होंने मेरठ में जनता की क्रान्तिकारी गतिविधियों में विस्फोटक स्थिति उत्पन्न करने के लिए धनसिंह कोतवाल को मुख्य रूप से दोषी ठहराया। उसका मानना था कि यदि धनसिंह कोतवाल ने अपने कर्तव्य का निर्वाह ठीक प्रकार से किया होता तो सम्भवतः मेरठ में जनता को भड़कने से रोका जा सकता था। धनसिंह कोतवाल को पुलिस नियंत्रण के लिए दोषी ठहराया गया। क्रान्तिकारी घटनाओं से प्रभावित लोगों ने अपनी गवाहियों में सीधे आरोप लगाते हुए कहा कि धनसिंह कोतवाल क्योंकि स्वयं गुर्जर है इसलिए उसने क्रान्तिकारियों, जिसमें गुर्जर बहुसंख्या में थे, को नहीं रोका। उन्होंने धनसिंह पर आन्दोलनकारियों को खुला संरक्षण देने का आरोप भी लगाया। धनसिंह कोतवाल ने उन्हें स्वयं आसपास के गांवों से बुलायाहै।

इस तरह मेजर विलियम्स द्वारा ली गई गवाहियों का स्वयं विवेचन किया जाये तो पता चलता है कि 10 मई 1857 को मेरठ में आन्दोलन का प्रस्फुटन स्वयं नहीं हुआ वरन् एक पूर्व योजना के तहत एक निश्चित कार्यवाही थी, जो परिस्थितिवश समय से पूर्व ही घटित हो गई। नवम्बर 1858 में मेरठ के कमिश्नर एफ0 विलियम द्वारा इसी सिलसिले में एक

रिपोर्ट नॉर्थ वेस्टर्न प्रान्त (वर्तमान उत्तर प्रदेश) के सचिव को भेजी गई थी। रिपोर्ट के अनुसार मेरठ की सैनिक छावनी में चर्बी वाले कारतूस और हड्डी के चूर्ण वाले आटे की बात बड़ी सावधानीपूर्वक फैलाई गई थी। रिपोर्ट में अयोध्या से आये एक साधु की संदिग्ध भूमिका की ओर भी इशारा किया गया था। देशभक्त सैनिक, मेरठ शहर की पुलिस, जनता और आसपास के ग्रामीण इस साधु के सम्पर्क में थे। मेरठ के आर्यसमाजी, इतिहासविद् एवं स्वतन्त्रता सेनानी आचार्य दीपांकर के अनुसार यह साधु स्वयं दयानन्द जी थे और वही मेरठ में 10 मई 1857 की घटनाओं के सूत्रधार थे। मेजर विलियम्स को दी गई गवाही के अनुसार कोतवाल स्वयं इस साधु से उनके सूरजकुण्ड स्थित ठिकाने पर मिले थे। हो सकता है ऊपरी तौर पर कोतवाल की यह सरकारी मुलाकात हो, परन्तु दोनों के आपस में सम्पर्क होने की बात से इन्कार नहीं किया जा सकता। वास्तव में कोतवाल सहित पूरी पुलिस फोर्स योजना में इस साधु (संभवतः स्वामी दयानन्द) के साथ देशव्यापी आन्दोलन की योजना में शामिल हो चुकी थी। 10 मई को जैसा कि इस रिपोर्ट में बताया गया है सभी सैनिकों ने एक साथ मेरठ में सभी स्थानों पर विद्रोह कर दिया। ठीक उसी प्रकार सदर बाजार की भीड़ जो पहले से ही हथियारों से लैस होकर इस घटना के लिए तैयार थी, ने भी अपनी क्रान्तिकारी गतिविधियां शुरू कर दी।

धनसिंह कोतवाल ने योजना के अनुसार बड़ी चतुराई से ब्रिटिश सरकार के प्रति वफादार पुलिसकर्मियों को कोतवाली के भीतर चले जाने और वहीं रहने का आदेश दिया। आदेश का पालन करते हुए अंग्रेजों के वफादार पिट्ठू पुलिसकर्मी क्रान्ति के दौरान कोतवाली में ही बैठे रहे। इस प्रकार अंग्रेजों के वफादारों की तरफ से क्रान्तिकारियों को रोकने का प्रयास नहीं हो सका, दूसरी तरफ उसने क्रान्तिकारी योजना से सहमत सिपाहियों को क्रान्ति में अग्रणी भूमिका निभाने का गुप्त आदेश दिया, फलस्वरूप उस दिन कई जगह पुलिस वालों को क्रान्तिकारियों की भीड़ का नेतृतव करते हुए देखा गया। धनसिंह कोतवाल अपने गांव पांचली और आसपास के क्रान्तिकारी गुर्जर बाहुल्य गांव घाट, नंगला, गगोल आदि की जनता के सम्पर्क में थे, धनसिंह कोतवाल का संदेश मिलते ही हजारों की संख्या में गुर्जर क्रान्तिकारी रात में मेरठ पहुंच गये। मेरठ के आसपास के गांवों में प्रचलित किंवदन्ती के अनुसार इस क्रान्तिकारी भीड़ ने धनसिंह कोतवाल के नेतृत्व में देर रात दो बजे जेल तोड़कर 836 कैदियों को छुड़ा लिया और जेल को आग लगा दी। मेरठ शहर और कैंट में जो कुछ भी अंग्रेजों से सम्बन्धित था उसे यह क्रान्तिकारियों की भीड़ पहले ही नष्ट कर चुकी थी। उपरोक्त वर्णन और विवेचना के आधार पर हम निःसंदेह कह सकते हैं कि धनसिंह कोतवाल ने 10 मई 1857 के दिन मेरठ में मुख्य भूमिका का निर्वाह करते हुए क्रान्तिकारियों को नेतृत्व प्रदान किया।

1857 की क्रान्ति की औपनिवेशिक व्याख्या (ब्रिटिश साम्राज्यवादी इतिहासकारों की व्याख्या) के अनुसार 1857 का गदर मात्र एक सैनिक विद्रोह था जिसका कारण सैनिक असन्तोष था। इन इतिहासकारों का मानना है कि सैनिक विद्रोहियों को कहीं भी जनप्रिय समर्थन प्राप्त नहीं था। ऐसा कहकर वह यह जताना चाहते थे कि ब्रिटिश शासन निर्दोष था और आम जनता उससे संतुष्ट थी। अंग्रेज इतिहासकारों, जिनमें जॉन लोरेंस और सीले प्रमुख हैं ने 1857 के गदर को मात्र एक सैनिक विद्रोह माना है। इन इतिहासकारों का निष्कर्ष यह है कि क्योंकि 1857 के विद्रोह को कहीं भी जनप्रिय समर्थन प्राप्त नहीं था, इसलिए इसे क्रान्ति या स्वतन्त्रता संग्राम नहीं कहा जा सकता। राष्ट्रवादी इतिहासकार वी0डी0 सावरकर और सब आॅल्ट्रन इतिहासकार रंजीत गुहा ने 1857 की क्रान्ति की साम्राज्यवादी व्याख्या का खंडन करते हुए उन क्रान्तिकारी घटनाओं का वर्णन किया हे, जिनमें कि जनता ने क्रान्ति में व्यापक स्तर पर भाग लिया था।

इन घटनाओं का वर्णन मेरठ में जनता की सहभागिता से ही शुरू हो जाता है। इसके अतिरिक्त समस्त पश्चिमी उत्तर प्रदेश के बन्जारों, रांघड़ों जाटों, त्यागियों और गुर्जर किसानों ने 1857 की क्रान्ति में व्यापक स्तर पर भाग लिया। पूर्वी उत्तर प्रदेश में तालुकदारों ने अग्रणी भूमिका निभाई। बुनकरों और अन्य मजदूरों, कारीगरों ने अनेक स्थानों पर क्रान्ति में भाग लिया। 1857 की क्रान्ति के व्यापक आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक कारण थे और देशभक्त जनता के हर वर्ग से आये थे, ऐसा अब आधुनिक इतिहासकार सिद्ध कर चुके हैं। अतः 1857 के गदर मात्र एक सैनिक विद्रोह नहीं वरन् जनसहभागिता से पूर्ण एक राष्ट्रीय स्वतन्त्रता संग्राम था। परन्तु 1857 के स्वतन्त्रता आन्दोलन में जनसहभागिता की शुरूआत कहां और किसके नेतृत्व में हुई? इस जनसहभागिता की शुरूआत के स्थान और उसमें सहभागिता दर्शाने वाले लोगों को ही 1857 की क्रान्ति का जनक कहा जा सकता है। क्योकि 1857 की क्रान्ति में जनता की सहभागिता की शुरूआत धनसिंह कोतवाल के नेतृत्व में मेरठ की जनता ने की थी। अतः ये ही 1857 की क्रान्ति के जनक कहे जा सकते हैं।

10 मई, 1857 को मेरठ में जो महत्त्वपूर्ण भूमिका धनसिंह और उनके अपने ग्राम पांचली के भाई बन्धुओं ने निभाई उसकी पृष्ठभूमि में अंग्रेजों के जुल्म की एक दास्तान छुपी हुई है। ब्रिटिश साम्राज्य की औपनिवेशिक अर्थव्यवस्था की कृषि नीति का मुख्य उद्देश्य सिर्फ अधिक से अधिक लगान वसूलना था। पश्चिमी उत्तर प्रदेश में अंग्रेजों ने महलवाड़ी व्यवस्था लागू की थी, जिसके तहत समस्त ग्राम से इकट्ठा लगान किया जाता था और मुखिया अथवा लम्बरदार लगान वसूलकर सरकार को पहुँचाता था। लगान की दरें बहुत ऊंची थीं, उसे बड़ी कठोरता से वसूला जाता था। कर न दे पाने पर किसानों को तरह-तरह से बेइज्जत करना, कोड़े मारना और उन्हें जमीनों से बेदखल करना एक आम बात थी, किसानों की हालात बद से बदतर हो गई थी। धनसिंह कोतवाल भी एक किसान परिवार और समुदाय से सम्बन्धित थे। किसानों के इन हालातों से वे बहुत दुखी थे। धनसिंह के पिता पांचली गांव के मुखिया थे, अतः अंग्रेज पांचली के उन ग्रामीणों को जो किसी कारणवश लगान

नहीं दे पाते थे, उन्हें धनसिंह के अहाते में कठोर सजा दिया करते थे, बचपन से ही इन घटनाओं को देखकर धनसिंह और उनके ग्रामवासियों के मन में आक्रोश जन्म लेने लगा। ग्रामीणों के दिलो दिमाग में ब्रिटिश विरोध लावे की तरह धधक रहाथा।

1857 की क्रान्ति में धनसिंह और उनके ग्राम पांचली की भूमिका का विवेचन करते हुए हम यह नहीं भूल सकते कि धनसिंह गुर्जर जाति में जन्मे थे, उनका गांव गुर्जर बाहुल्य था। 1707 ई0 में औरंगजेब की मृत्यु के पश्चात् गुर्जरों ने पश्चिमी उत्तर प्रदेश में अपनी राजनीतिक शक्ति काफी बढ़ा ली थी। वह लढोरा, मुण्डलाना, टिमली, परीक्षितगढ़, दादरी, समथर, लौहागढ़, कुंजा बहादुरपुर इत्यादि रियासतें कायम कर वे समस्त पश्चिम उत्तर प्रदेश में एक गुर्जर राज्य बनाने के सपने देखने लगे थे।1803 में अंग्रेजों द्वारा दोआबा पर अधिकार करने के बाद गुर्जरों की शक्ति क्षीण हो गई थी, गुर्जर मन ही मन अपनी राजनीतिक हार को पचा नहीं पा रहे थे। सर्वप्रथम 1824 में कुंजा बहादुरपुर के तालुकदार विजय सिंह और कल्याण सिंह उर्फ कलवा गुर्जर के नेतृत्व में सहारनपुर में जोरदार विद्रोह किये। पश्चिमी उत्तर प्रदेश के गुर्जरों ने इस विद्रोह में प्रतयक्ष रूप से भाग लिया, परन्तु यह प्रयास सफल नहीं हो सका। 1857 के सैनिक विद्रोह ने उन्हें एक और अवसर प्रदान कर दिया। समस्त पश्चिमी उत्तर प्रदेश में देहरादून से लेकर दिल्ली तक, मुरादाबाद, बिजनौर, आगरा, झांसी तक, पंजाब, राजस्थान से लेकर महाराष्ट्र तक गुर्जर इस स्वतन्त्रता संग्राम में कूद पड़े। गुर्जरों ने इस क्रान्ति में व्यापक स्तर पर भाग लिया। हजारों की संख्या में गुर्जर शहीद हुए और लाखों गुर्जरों को ब्रिटेन के दूसरे उपनिवेशों में कृषि मजदूर के रूप में निर्वासित कर दिया। इस प्रकार धनसिंह और पांचली, घाट, नंगला और गगोल के गुर्जरों का संघर्ष गुर्जरों के देशव्यापी ब्रिटिश विरोध का हिस्सा था। यह तो बस एक शुरूआत थीं

1857 की क्रान्ति के कुछ समय पूर्व एक घटना ने भी धनसिंह और ग्रामवासियों को अंग्रेजी शासन को उखाड़ फैंकने का संकल्प लेने के लिए प्रेरित किया। पांचली और उसके निकट के ग्रामों मे प्रचलित किंवदन्ती के अनुसार घटना इस प्रकार है, "अप्रैल का महीना था। किसान अपनी फसलों को उठाने में लगे हुए थे। एक दिन करीब 10 या 11 बजे के आसपास दो अंग्रेज तथा एक मेम गांव पांचली खुर्द के निकट स्थित आमों के बाग में थोड़ा आराम करने के लिए रूके। इसी बाग के समीप पांचली गांव के तीन किसान जिनके नाम मंगत सिंह, नरपत सिंह और झज्जड़ सिंह (अथवा भज्जड़ सिंह) थे, जो कृषि कार्यों में लगे थे। अंग्रेजों ने इन किसानों से पानी पिलाने का आग्रह किया। अज्ञात कारणों से इन किसानों और अंग्रेजों में संघर्ष हो गया। इन किसानों ने अंग्रेजों का वीरतापूर्वक सामना कर एक अंग्रेज और मेम को पकड़ लिया। एक अंग्रेज भागने में सफल रहा। पकड़े गये अंग्रेज सिपाही को इन्होंने हाथ-बैर बांधकर गर्म रेत में डाल दिया और मेम से बलपूर्वक दायं हकवाई। दो घंटे बाद भागा हुआ सिपाही एक अंग्रेज अधिकारी और 25-30 सिपाहियों के साथ वापस लौटा। तब तक किसान अंग्रेज सैनिकों से छीने हुए हथियारों, जिनमें एक सोने की मूठ वाली तलवार भी थी, को लेकर भाग चुके थे। अंग्रेजों की दण्ड नीति बहुत कठोर थी, इस घटना की जाँच करने और दोषियों को गिरफ्तार कर अंग्रेजों को सौंपने की जिम्मेदारी धनसिंह जी के पिता, जोकि गांव के मुखिया थे, को सौंपी गई। ऐलान किया गया कि यदि मुखिया ने इन तीनो बागियों को पकड़कर अंग्रेजों को नहीं सौंपा तो सजा गांव वालों और मुखिया को भुगतनी पड़ेगी। बहुत से ग्रामवासी भयवश गांव से पलायन कर गए। अंततः नरपत सिंह और झज्जड़ सिंह ने तो समर्पण कर दिया किन्तु मंगत सिंह फरार ही रहे। दोनों किसानों को 30-30 कोड़ो और जमीन से बेदखली की सजा दी गई। फरार मंगत सिंह के परिवार के तीन सदस्यों को गांव के समीप ही फांसी पर लटका दिया गया। धनसिंह के पिता को मंगत सिंह को न ढूंढ पाने के कारण छः माह के कठोर कारावास की सजा दी गई। इस घटना ने धनसिंह सहित पांचली के बच्चे-बच्चे को विद्रोही बना दिया।" जैसे ही 10 मई को मेरठ में सैनिक बगावत हुई धनसिंह और उनके ग्रामवासियों ने क्रान्ति में सहभागिता की शुरूआत कर इतिहास रच दिया।

क्रान्ति में अग्रणी भूमिका निभाने की सजा पांचली व अन्य ग्रामों के किसानों को मिली। मेरठ गजेटियर के वर्णन के अनुसार 4 जुलाई, 1857 को प्रातः चार बजे पांचली पर एक अंग्रेज रिसाले ने तोपों से हमला किया। रिसालें में 56 घुड़सवाल, 38 पैदल सिपाही और 10 तोपची थे। पूरे ग्राम को तोप से उड़ा दिया गया। सैकड़ों किसान मारे गए, जो बच गऐ उनमे से 46 लोग पकड़कर कैद कर लिए गए और इनमें से 40 को बाद में फाँसी की सजा दी गई थी और पूरे ग्राम को लगभग नष्ट कर दिया गया। ग्राम गगोल के भी 9 लोगों को दशहरे के दिन फाँसी की सजा दी गई और पूरे ग्राम को नष्ट कर दिया। आज भी इस ग्राम में इस शहादत के कारण दशहरा नहीं मनाया जाता।

निष्कर्ष

उपरोक्त समस्त विवरण से यह स्पष्ट हो जाता है कि 10 मई 1857 को मेरठ में स्वतन्त्रता आन्दोलन का नेतृत्व शहीद धनसिंह कोतवाल के द्वारा किया गया था और उन्हें ही वास्तव में इसका श्रेय मिलना चाहिए।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *डा0 सुशील भाटी, "1857 की जनक्रान्ति के जनक धनसिंह कोतवाल", मेरठ 2002*
2. *डा0 सुशील भाटी, "1857 की जनक्रान्ति के जनक धनसिंह कोतवाल पर इतिहास लेखन", मेरठ 1919*
3. *जे0ए0बी0 पामर, "म्यूटिनी आउटब्रेक एट मेरठ इन 1857", कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 1966*
4. *मेरठ डिस्ट्रिक्ट नेरेटिव*
5. *गणपति सिंह, 1857 के गूजर शहीर, भारतीय इतिहास का शानदार अध्याय, 1984, पृ0सं0 37, http://books.google.co.in/books?id=8AG2AAAAIAAJ*
6. *हाकिम मोहम्मद सईद, 'रोड टू पाकिस्तान', 1990, पृ0सं0 545*
7. *स्वामी वासुदेवानंद तीर्थ- "आर्य समाज एवं स्वतन्त्र सेनानी" मेरठ, 1991*
8. *वेदानंद आर्य- "1857 का मुक्ति संग्राम तथा उसका ऐतिहासिक स्वरूप", 1993, पृ0सं0 98 http://books.google.co.in/books? 1993, id=DVIFAQAAIAAJ*

9. आचार्य दीपांकर, स्वाधीनता संग्राम और मेरठ, जनमत प्रकाशन, मेरठ 1993
10. ई0बी0 जोशी, मेरठ डिस्ट्रिक्ट गजेटियर गवर्नमेन्ट, प्रेस, 1965, पृ0सं0 52 http://books.google.co.in/books?id=uwVDAAAAYAAJ
11. यतीन्द्र कुमार वर्मा, "स्वतन्त्रता की प्रथम ज्योति", मयराष्ट्र मानस, मेरठ, पृ0सं0 48
12. रमेश चन्द्र मजूमदार, द सिपोय म्यूटनी एण्ड रिवोल्ट ऑफ 1857, कलकत्ता फर्मा, के0एल0 मुखोपाध्याय (1963) द्वारा प्रकाशित
13. एस0बी0 चैधरी, सिविल रिबैलयन इन इण्डियन मयूटनीज 1857-59, बल्ड्ड प्रेस, कलकत्ता द्वारा प्रकाशित
14. एस0एन0-सेन, 1857, "हिस्ट्री ऑफ द फ्रीडम् मूवमेन्ट ऑफ इण्डिया (1857-1947) न्यू एज पब्लिकेशन, दरियागंज, नई दिल्ली।
15. पी0सी0 जोशी रिलबैलयन 1857, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित।
16. सन् 1857 में मेरठ के गुर्जरः एक दस्तावेज, आर0एच0 डनलप, तत्कालीन मजिस्ट्रेट, मेरठ के गुप्त पत्र, दिनांक 28 जून, 1857, उ0प्र0 राज्य अभिलेखागार, इलाहाबाद।
17. ए0के0 गाँधी- "1857 क्रान्ति व क्रान्तिधारा डॉ0 रोताश कुमार, 1857 की क्रान्ति में कोतवाल धन्ना सिंह एवं मेरठ परिक्षेत्र के गुर्जरों का योगदान, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास भारत, 2016
18. डॉ0 रोताश कुमार, "1857 की क्रान्ति में कोतवाल धन्ना सिंह एवं मेरठ परिक्षेत्र के गुर्जरों का योगदान", जे0पी0 पब्लि0, नई दिल्ली।
19. जीवन परिचय व शिक्षा सम्बन्धी जानकारी पांचवली गांव के बुजुर्गों मुख्य रूप से निहाल सिंह (105 वर्ष), श्री हरिश्चन्द (86 वर्ष), श्री मामचन्द (84 वर्ष), श्री गिरवर सिंह (80 वर्ष), पं0 भोपाल शर्मा (87 वर्ष), चै0 बीर नारायण (84 वर्ष) एवं श्री रामचन्द्र शर्मा (88 वर्ष) से बातचीत पर आधारित है।